Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IX, Issue No. XVIII, April-2015, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

जैनेन्द्र की कहानियों में चिन्तन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IX, Issue No. XVIII, April-2015, ISSN 2230-7540

जैनेन्द्र की कहानियों में चिन्तन

Sunil Rani

Research Scholar, Monad University, UP

----------X----------

हिन्दी साहित्य में जेनेन्द्र जी का महत्वपूर्ण स्थान है। इनका जन्म 2 जनवरी सन् 1905 में अलीगढ़ जिले के कोड़ियागंज गांव में हुआ। इनके पिताजी का नाम श्री प्यारेलाल था। वे गांव में कपड़े का व्यापार करते थे और लोगों को रोचक किस्से बनाकर सुनाया करते थे। वही लेखन प्रभाव जेनेन्द्र जी पर भी पड़ा। इनके नाम के बारे में एक रोचक कथा प्रसंग इस प्रकार है – संकट चतुर्थी के दिन जन्म होने के कारण इनका नाम हसी–2 में पड़ोसियों ने 'सकटुआ' रख दिया परन्तु जब इनके पिताजी को इस बात का पता चला तो वे झुझलाए और कहा कि यह तो आनन्द की घड़ी है और इनका नाम आनन्दी लाल रख दिया गया। दो वर्ष उपरान्त उनके पिताजी का निधन हो गया। तत्पश्चात् इनकी माता रामदेवी बाई इन्हें अपने भाई के पास हस्तिनापुर ले आई। 1911 में हस्तिनापुर स्थित ऋषभ ब्रहमचर्याश्रम में प्रवेश ले लिया। वहां गुरूकुल में प्रवेश लेने के बाद इनका नाम आनन्दीलाल से बदल कर जेनेन्द्र कुमार रख दिया गया। इन्होंने दसवीं की परीक्षा प्राइवेट तौर पर उर्तीण की। दसवीं के बाद इन्होंने हिन्दू कॉलेज बनारस में इंटरमीडियट में नामांकन हुआ। उन दिनों सन् 1920 में अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी के 'असहयोग आन्दोलन' से प्रभावित होकर इन्होंने अपनी पढ़ाई छोड़ दी और स्वतन्त्रता संग्राम में पर्दापण किया। सन् 1923 में इन्होंने नागपुर में राजनैतिक पत्रों के संवाददाता के रूप में काम करना शुरू किया और इसी आरोप में इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। तीन महीने बाद इन्हें जेल से मुक्त कर दिया गया। उसके बाद ये किसी नौकरी की तलाश में कलकता पहुंच गए परन्तु वहां कोई काम न मिलने के कारण छः सात दिन पश्चात पुनः दिल्ली लौट आए। सन् 1929 में इनका विवाह श्रीमती भगवती देवी से हुआ। परमात्मा की कृपा से इनके घर में 2 पुत्रों व 3 पुत्रियों ने जन्म लिया। सन् 1930 और 1932 में पुनः स्वतंत्रता प्राप्ति के उपलक्ष्य में ये जेल गए। सन् 1934 में इनके मुंशी प्रेमचन्द जी के साथ घनिष्ट सम्बंध बन गये जिनसे साहित्य रचना के लिए बहुत प्रेरणा मिली। जैनेन्द्र जी का पहला कहानी संग्रह 'फांसी' 1929 में और पहला उपन्यास 'परख' भी 1929 में प्रकाशित हुआ। जेनेन्द्र जी की कहानियों का केन्द्रीय विषय नारी है। जेनेन्द्र जी के विचार अधिकांशत नारी पर ही आधारित हैं। उनकी कहानी 'एक रात' जाह्नवी' 'ध्रुव यात्रा', 'पत्नी' **स्त्री की घुटन, पीड़ा और मुक्ति से युक्त है। कथा साहित्य के अतिरिक्त जैनेन्द्र जी के** निबन्धों व लेखों में भी विवाह और प्रेम, काम और प्रेम, पत्नी बनाम प्रेम ब्रह्मचर्य, अहिंसा आदि की चर्चा है।

विचारणीय प्रश्न यह है कि जैनेन्द्र ने स्त्री को लेकर इतना क्यों लिखा है और उसमें नयापन क्या है। स्व. भारत भूषण अग्रवाल ने जैनेन्द्र की कहानियों के दम्पतियों की चर्चा करते हुए लिखा है :

''जैनेन्द्र का साहित्य पढ़ी–लिखी नारी का पिंजड़ा है।''1 जैनेन्द्र जी ने अपनी कहानियों में नारी को एक भिन्न दृष्टि से देखा और चित्रित किया है। यही कारण है कि हिन्दी के प्रतिष्ठित आलोचक, जैनेन्द्र की नारी को सहज रूप से स्वीकार नहीं कर पाए। सिद्ध आलोचक डॉ नन्द दुलारे वाजपेयी ने अपनी पुस्तक 'नया साहित्य नए प्रश्न' में जैनेन्द्र के पात्रों का एक सिद्वान्त प्रस्तुत किया है। इसके अनुसार जैनेन्द्र की कहानियों का तीसरा पात्र कोई नारी ही होती है। उसकी मनोवृत्तिया द्वन्द्वमयी एवं अनिर्णीत रहा करती है। यह अनिर्णय ही उसके आकर्षण का केन्द्र है जिस युग में जैनेन्द्र ने लिखना शुरू किया था। उस समय में नारी को एक प्रकाश स्तम्भ समझा जाता था। जैनेन्द्र ने नारी को एक नए रूप में प्रस्तुत किया है।

जैनेन्द्र की 'पत्नी' कहानी सुनन्दा का अपने पति के स्वास्थ्य के प्रति चिंतित व उसकी उपेक्षा में भी मीठी खीज को ढूंढता है। कम पढ़ी–लिखी होने के कारण वह देश–प्रेम, भारत माता व सरकार जैसे शब्दों के अर्थ नहीं समझ पाती। उसे तो बस इतना ही समझ आता है कि पति जो भी भाग–दौड़ कर रहे हैं वह कुछ भले के लिए ही कर रहे हैं। इस प्रकार पति देशप्रेम में संलिप्त हैं और पत्नी, पति प्रेम में। पति हर समय आंदोलन नीति बनाने में व्यस्त रहता है और पत्नी अपने पति की स्वास्थ्य चिंता में। सुनन्दा सोचती है – ''नहीं, सोचती कहॉ है, अलस भाव से वह तो वहां बैठी ही है। सोचने को तो है ? यही कि कोयले न बुझ जाएं, वह जाने कब 1 डॉ लक्ष्मी नारायण नन्दवाना, सचिव – जैनेन्द्र व्यक्तित्व, पृ. 50 तक आएंगे, एक बज गया है कुछ हो, आदमी को अपनी देह की फिक्र तो करनी चाहिए।''1 सुनन्दा पति के देर से आने पर नाराज हो कर मीठी खीज दिखाती है, लेकिन पति उसके प्रति बेपरवाह है उसके लिए तो पत्नी मानों सेवा करने के लिए ही बनी है। वह अपने हिस्से का खाना भी पति व उसके मित्रों को दे देती है और स्वयं भूखी रहती है और उस पर भी प्रसन्नतम अनुभव करती है कि उसने अपने पति के लिए एक दिन का व्रत रखा है। उपेक्षा के बावजूद वह त्याग की प्रतिमा है। निम्न संवाद सुनन्दा व उसके पति के बीच का दर्शाता है कि वह आदर्श भारतीय नारी है। कालिन्दी ने अपने व अपने मित्रो की भूख की बात जब सुनन्दा को कही तो पहले तो वह नाराज हुई क्योंकि उसने सिर्फ अपने व अपने पति के लिए ही खाना बनाया था, लेकिन जब बाद में उसने बड़ी थाली में सभी के लिए, अपने हिस्से का खाना भी परोस लिया तब कालिन्दी के मित्रों ने कहा, ''कालिन्दी, तुम तो कहते थे खाना नहीं है।'' कालिन्दी ने झेंपकर कहा – ''मेरा मतलब काफी नहीं है।'' दूसरे मित्र ने कहा –''बहुत काफी है, सब चल जाएगा।''

www.ignited.in

''देखूं, कुछ और हो तो।'' इतना कहकर कालिन्दी उठ गया। आकर सुनन्दा से बोला, ''यह तुमसे किसने कहा था कि खाना वहां ले आओ ?

''मैने क्या कहा था''?

सुनन्दा कुछ न बोली।

''चलो, उठा लाओ थाली।

हम होटल में जायेंगे।''1

उपर्युक्त कथन में कालिन्दी का सुनन्दा के प्रति रोष है लेकिन सुनन्दा फिर भी अपने पति की इज्जत, मर्यादा का ख्याल रखते हुए खुद भुखी रहकर भी आत्मसंतुष्टि अनुभव करती है। निः सन्देह आनन्दी का यह चित्र सराहनीय व अनुकरणीय है।

'एक रात कथा के' पात्र जयराज द्वारा जैनेन्द्र जी ने यह दर्शाया है कि अपने लक्ष्य को ही सर्वस्व मानकर शेष को तुच्छ मानना जीवन के लिए श्रेयकारी नहीं है। जीवन में सभी के साथ स्नेह भाव रखना आवश्यक है। इसी में समाज का सौन्दर्य है। 'एक रात' कहानी की नायिका सुदर्शना की जब जयराज से मुलाकात होती है तो वह समझती है कि अब तक जो उसने जीवन जिया है, उसमे वह पूर्ण रूप से अपने पति को समर्पित नहीं हो सकी, क्योंकि जयराज को देखते ही उसे प्रेम का अहसास होता है, जो उसे अपने ग्रहस्थ जीवन में नहीं हुआ और यही अहसास उसे, उसके पति के प्रति पतिव्रता नहीं रहने देता। यानि यह सोच मात्र उसे पतिव्रता शब्द की अवहेलना लगती है और अपने पति के प्रति यह ग्लानि भाव प्रकट करती हुई कहती है –''मैं तुम्हारे घर से निकाल देने लायक है, मैं सच कहती है जान–बूझकर मैं तुम्हें धोखा देने वाली न थी, लेकिन मुझे आज ही मालूम हुआ कि मैं पूरी तरह समर्पित नहीं हूँ। सो आज मैं तुम्हारे सामने खड़ी हूं कि मुझे मुंह काला कर जाने दो। अपनी कृपा के नीचे मुझे एक पल भी न रहने दो। तुम अपनी कृपा की छाया तो उठाओगे नहीं, तब मुझे ही इजाजत दो कि मैं उसे कलंकित न करूं।

इस प्रकार सुदर्शन अपने पति पर व्यक्त करती है कि वह सोच मात्र से ही उसके प्रति समर्पित नहीं और इस ग्लानि भाव से वह, उन नजरों से दूर हो जाना चाहती है। दूसरी तरफ वह जयराज को, जो कि अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित है। उसे सत्य प्रेम का अहसास कराती है। ''दोनो जैसे काल के आदि से चिर–परिचित है, चिर – अभिन्न है कि दोनो के बीच की वाणी मौन है और शब्द झमेला है। शब्द मात्र अपने आवरण के लिए है। जब अपना सामना करते कठिनता होती है, जब यत्नपूर्वक अपने प्रति विमुखता अपनानी होती है, तब बीच में मानो अन्तर डालने के लिए वह भाषा और ये शब्द है और ये दोनो तो मानों यहां पहुंचकर परस्पर प्राप्त है, जहां शब्द मौन में ऐसा खोया है, जैसे बूंद सागर में।''

जैनेन्द्र ने अपने पात्रों का सजृन प्रत्यक्ष अनुभव से किया है। उनकी कहानियों की यही विशेषता है कि प्रत्यक्ष अनुभव के द्वारा, उन्होंने अपने जीवन को रूपांकित किया है।

उपन्यास त्यागपत्र में जज एम. दयाल अपनी बुआ को पापिष्ठा या व्यभिचारिणी नहीं मानते और इसीलिए वह अपने पद से त्यागपत्र भी दे देते हैं। सम्मेलन पत्रिका में डा प्रेम नारायण शुक्ल अपने सम्पादकीय में जैनेन्द्र को श्रद्वांजलि देते हुए लिखते हैं – जैनेन्द्र ने मुख्यतः नारी पत्रों के भीषण मानसिक संघर्ष व द्वन्दों को रेखांकित करने का प्रयास किया है। नर–नारी सम्बंधों के त्रिकोणात्मक स्वरूप के सम्बंध में उनका चिंतन प्रायः चर्चित रहा है।

जैनेन्द्र जी कहते हैं कि आस्था से अलग उसके आधार (परमात्मा) को नहीं देखा जा सकता। इसमें यह अनुमान लगाया जा सकता है कि सम्भवतः उनकी आस्था स्वयं उस श्रद्धा–बुद्धि में होगी जो तर्क बुद्धि का पूरा लाभ उठाकर भी उसे गति में बाधक नहीं होने देती और जीवन की समग्रता में दरार नहीं पड़ने देती।

जैनेन्द्र जी टालस्टाय की अपेक्षा दॉस्तॉयवस्की को अधिक बड़ा सर्जक मानते हैं। कदाचित इसलिए कि उनकी दृष्टि टॉलस्टाय की कल्पना शक्ति की पहुंच भी मनुष्यता को उस आयाम तक ही है, जिसे नैतिक आयाम कह सकते हैं। उनकी धार्मिकता भी नैतिक आवेगों से परिचलित धार्मिकता ही है। चरम आसक्ति और चरम अनासक्ति के दोनो छोरों को जानने वाली समत्वबुद्धि से प्रेरित आध्यात्मिक विजन तक वह नहीं उठ पाती। दॉस्तॉयवस्की में इन दोनो छोरों की पहचान है, प्रेमतत्व की एक धार्मिक उत्कटता भी उनमें है। शायद उनकी यही विशेषता जैनेन्द्र जी को उनकी ओर आकर्षित करती है।

पत्र–पत्रिकाएं

1. ओम शान्ति मीडिया, सितम्बर 2013, अंक–11।
2. पथिक संदेश पत्रिका, जून 2011।
3. दैनिक भास्कर – रोहतक, पृ. 02 (आशो) 20 अक्तूबर 2013।
4. ओशो वर्ल्ड मासिक पत्रिका, नवम्बर 2013।
5. अखण्ड ज्योति, मासिक पत्रिका, अगस्त 1965।
6. संस्कारम् पत्रिका, मार्च 2013।
7. कल्याण पत्रिका, जीवनचर्या अंक जून 2012।
8. संगम पत्रिका, अप्रैल 2013।
9. योग संदेश पत्रिका अक्तूबर 2007।
10. संस्कारम पत्रिका, अक्तूबर 2013।